JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# ओमप्रकाश वाल्मीकि के कथा साहित्य में दलित चेतना

शोधार्थी

रवीन्द्र कुमार

शोध निर्देशक-डॉ0 अमिता प्रकाश

हिन्दी विभाग रा0स्ना0 महा0 सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

## सांराश-

हिन्दू धर्म में जातीय व्यवस्था की अमानवीयता का परिणाम इतना भयानक है कि आज भी आधुनिक भारतीय समाज हजारों जातियों में बंटा हुआ है, जातिगत भेदभाव आज भी उसी तरह जड़े जमाये हुए है जैसे कि हजारों वर्ष पहले था। दलित विमर्श इस जड़ को उखाड़ फेंकने के लिए कृतसंकल्प है । कुछ लोग दलित का अर्थ अनुसूचित जातियों तक सीमित मानते हैं,जबकि शाब्दिक दृष्टि में भारतीय समाज के स्त्री तथा पिछड़े वर्ग के साथ सवर्ण जातियों के वे लोग भी आते है, जिनका किसी भी रूप में मानसिक या आर्थिक शोषण किया गया हो । ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित के पिछड़ेपन व उसके शोषण के प्रति आवाज को बुलन्द कर उसे समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया व दलितों के समाज की मुख्यधारा से अलग रहने का मुख्य कारण भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था के आधार पर जातिगत भेद को बताया । उनके अनुसार दलित ही दलित की पीड़ा का बेहतर ढ़ग से समझ सकता है, और वही उस अनुभव की प्रमाणिक अभिव्यक्ति कर सकता है। इस आशय का प्रमाण उन्होनें अपनी आत्मकथा झूठन में दिया ।

**मूलशब्द-** दलित, शूद्र, बहिष्कृत, विमर्श, द्विज, मनुवादी व्यवस्था, अस्पृश्य, बंधुआ मजदूर, डेप्रेस्ड क्लासेज, सच्छूत आदि ।

दलित साहित्य अपने उद्भव में नया नहीं है, इस पर चर्चा वर्षों से होती आ रही है । इसे शोध की परिधि में रखकर आज के समय में दलित साहित्य पर जीवन्त बहस चल रही हैं । जब से सृष्टि का निर्माण हुआ ,तब से मानव जाति का उदय माना जाता हैं । वह अपने कर्मों के अनुसार चार भागों मे विभक्त हो गया, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र । हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत आदिकाल में नाथों और सिद्धों का साहित्य, भक्तिकाल में कबीर और

रैदास जैसे संतो की कविताएं तथा परवर्ती काल में हीरा डोम की कविता के साथ ही गद्य के आगमन और अभिव्यक्ति के नूतन माध्यमों ने साहित्य की इस मुख्य धारा को अनेक दिशाओं में मोड़ने की कोशिश की,हम जानते हैं कि दलित अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए ये दासों की तरह दूसरों पर आश्रित रहते थे और चाह कर भी अपने जीवन सें सम्बंधित निर्णय नहीं ले सकते थें। निर्णय ले लेने पर ये दण्ड के भागी बन जाते थे। सामाजिक व्यवस्था से उनको बहिष्कृत कर दिया जाता था। भारतीय सामाजिक जीवन की मुख्यधारा के अंदर हाशियें का जीवन जी रहे इन लोगों ने एक तरह से गुलामी की यातना को सहा था और जब भी अवसर मिला अपनी बातों को समाज के सम्मुख रखा। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने दलित कथा साहित्य में दलितोत्थान की चेतना को अभिव्यक्त दी हैं, वर्ण व्यवस्था के प्रति उद्गार उनके साहित्य ( कहानी, आत्मकथा ) में समानभाव से अवतरित हुए है। जातिगत विभेद को ओमप्रकाश वाल्मीकि ने भारतीय समाज और संस्कृति के लिए हानिकारक और अशुभ माना हैं। ओम प्रकाश वाल्मीकि की दलित चेतना वस्तुनिष्ठ और यर्थाथवादी हैं, क्योंकि वे कविता के माध्यम से समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव सामाजिक विषमता की छोटी -छोटी बातें उनके हृदय से टकराकर काव्य रूप में बहने लगी। उनके काव्य में दलित उत्पीड़न के विरुद्ध तीव्र स्वर था।

भारत में दलित क्रान्ति का जन्म द्विजों द्वारा समाज में दलितों के विरोध के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है। द्विजों द्वारा किये जाने वाले विरोध का स्वरूप प्राचीन काल से भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था है। इसी वर्ण व्यवस्था से ही दलित दृष्टिकोण का निर्माण हुआ। दलित दृष्टिकोण सदियों से चली आ रही मनुवादी व्यवस्था के विरोध का परिणाम है। मनुवादी विरोध का अभिप्राय समाज में व्याप्त वर्ण और जाति व्यवस्था का विरोध करना और उसके स्थान पर एक समान समाज को स्थापित करना है। दलित साहित्य के सम्पूर्ण परिचय से पहले 'दलित ' शब्द का अर्थ , स्वरूप एवं उसके विकास की चर्चा करनी जरूरी हो जाती है।

भारतीय सनातन समाज में शोषित-उत्पीड़ित, दबी-कुचली, नीच, सामाजिक व्यवस्था से अलग, जिसका दलन किया गया हो उसे 'दलित' कहा जाता है। दलित शब्द का प्रयोग सौ वर्षों से भी ज्यादा समय से होता आ रहा है। इसको कई अन्य नामों से भी संबोधित किया जाता रहा है, जैसे- शूद्र, अवर्ण, अस्पृश्य, पंचमवर्ण, हरिजन, बहुजन आदि। शूद्र और अस्पृश्य शब्द प्रताड़ना के प्रतीक के रूप में जाने-जाते हैं। 'दलित' शब्द निम्न जातियों के विकास और सशक्तिकरण के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रहा है। निम्न वर्ग के लोगों द्वारा दलित शब्द को अपने लिए स्वीकार कर लिया है, जो अब दलित शब्द के रूप में जाने जाते है।

'दलित' शब्द एक वर्गीय शब्द है, जो न केवल अछूतों को ही अपने भीतर लेता है बल्कि अभाव ग्रस्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि सभी वर्गो व जातियों को जिनकी आर्थिक दशा खराब हो जो विभिन्न प्रकार के अभावों में जीवन जीते है, जैसे- खेतीहर मजदूर, बंधुआ मजदूर, भूमिहीन, गरीब, बेराजेगार महिलाएँ और अनाथ बच्चे ये सब चाहे किसी भी जाति या धर्म से सम्बद्ध हो वर्गीय दृष्टि से दलित ही होते हैं। जैसे-जैसे जातियाँ टूटती हैं और

वर्ग का उदय होता है। वैसे-वसे दलित शब्द व्यापक होता जाता है, किन्तु भारतीय समाज का यथार्थ संकुचित शब्द है, जबकि व्यापक शब्द काल्पनिक आदर्श अधिक है वास्तविक यथार्थ कम।

दलित शब्द की विभिन्न विद्वानों द्वारा निम्नलिखित परिभाषाएं दी गई हैं-

**ओम प्रकाश वाल्मीकि के अनुसार**-"दलित शब्द व्यापक अर्थ बोध की अभिव्यंजना देता है। भारतीय समाज में जिसे अस्पृश्य माना गया वह व्यक्ति ही दलित है। दुर्गम, पहाड़ों, वनों के बीच जीवनयापन करने के लिए बाध्य जनजातियां और आदिवासी जरायमपेशा घोषित जातियां सभी इसी दायरे में आती हैं। सभी वर्गो की स्त्रियां दलित है। बहुत कम श्रम मूल्य पर चौबीसों घंटे काम करने वाला श्रमिक, बंधुआ मजदूर दलित की श्रेणी में आते है।"[1]

**दलित आलोचक एन0 सिंह के अनुसार,**- "दलित वह है जिसका दलन या उत्पीड़न किया गया हो। यह उत्पीड़न चाहे शास्त्र के द्वारा किया गया हो या शस्त्र के द्वारा। कुछ लोग दलित का अर्थ अनुसूचित जातियों तक सीमित करतें है ,जबकि शाब्दिक दृष्टि में भारतीय समाज के स्त्री तथा पिछड़े वर्ग के साथ सर्वण जातियों के वे लोग भी आते है, जिनका किसी भी रूप में मानसिक या आर्थिक शोषण किया गया हो।"[2]

**डॉ0 धर्मवीर के अनुसार**- "आज दलित वर्ग अंग्रेजी के 'डेप्रेस्ड क्लासेज' का अनुवाद है। इसका अर्थ समाज के उस वर्ग से है जो सताया गया है।"[3]

**डॉ0 श्यौराज सिंह बैचेन के अनुसार**-"दलित वो है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।"[4]

**कंवल भारती के अनुसार**- "दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गन्दे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है। जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही और वही केवल दलित है और इसके अन्तर्गत वही जातियां आती है जिन्हें अनुसूचित जाति कहा जाता है।"[5]

**बजरंग बिहारी तिवारी के अनुसार**- दलित वर्ण-व्यवस्था के बाहर पड़ते हैं। उन्हें अतिशूद्र, पंचमवर्ण, अंत्यज आदि नाम दिए गए है।ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये वर्ण व्यवस्था से भीतर है। जो इस दायरे से बहिष्कृत है वो दलित है।"[6]

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि दलित का वर्ण व्यवस्था में कोई स्थान नहीं है। उसे कर्म के आधार पर वर्णित चारों वर्णो में स्थान नहीं दिया गया, उसे समाज से अलग बहिष्कृत कर दिया गया। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित के पिछड़ेपन व उसके शोषण के प्रति आवाज को बुलन्द कर उसे समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया व दलितों के समाज की मुख्यधारा से अलग रहने का मुख्य कारण भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था के आधार पर जातिगत भेद को बताया। हिन्दी साहित्य में गद्य पहले मनोरंजन के लिए लिखा जाता

था ,परन्तु बाद में इसका रूप वास्तविकता की ओर बढ़ने लगा। इस वास्तविकता को समाने रख कर हिन्दी साहित्य में अनेक कहानियों की रचना हुई। साहित्य समाज का दपर्ण होने के नाते बहुत से कहानीकारों ने इस दपर्ण को अपनी कहानी या लेखनी का विषय बनाया। इसी कारण लेखकों द्वारा समाज की वास्तविकता को आम जन तक लाने का कार्य किया। हिन्दी दलित लेखन और चिंतन की जो आज नई धारा विकसित हुई है, ओमप्रकाश वाल्मीकि उसके प्रतिनिधि हस्ताक्षर है। ओमप्रकाश वैचारिक तौर पर साफ एवं विवेक सम्पन्न रचनाकार है। वे वास्तव में एक कहानिकार, नाटककार, व एक कवि के रूप में खुद को स्थापित कर लिया है। उनकी समस्त कहानी पाठकों को पढ़ने के बाद सोचने और समझने को मजबूर करती है। उनकी हर कहानी जातीय विशिष्टताओं का यथार्थ पेशकर, परम्परागत दावों की चकाचौध से बचकर किसी अंधेरे कोने की कड़वी सच्चाई सामने लेकर आती। इन कहानियों के माध्यम से करोड़ों दलित जीवन के ऐसे चित्र सामने आते है। 'सलाम' कहानी इस संग्रह की प्रतिनिधि कहानी है। इस कहानी का नायक 'हरीश' भंगी समाज का है। यह कहानी हरीश के विवाह के इर्द-गिर्द घूमती है । इस कहानी में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने यह बताने का प्रयास किया है कि समय के बदलते सन्दर्भ में नई पीढ़ी के शिक्षित नवयुवक द्वारा किस तरह से सदियों से चली आ रही रुढ़ि प्रथाओं का विरोध किया है। इस कहानी के द्वारा समाज में नवतरुण युवा पीढ़ी के माध्यम से दलितों की अपनी अस्मिता और स्वाभिमान को जागृत करने का प्रयास हुआ है। 'सपना' कहानी में समाजिक चेतना जब दलितों की सहायता से मंदिर बनकर तैयार हो जाता है तब अनुष्ठान के वक्त वही जात का मामला सामने आ जाता है। उनका स्थान जाति के अनुसार चप्पल और जूतों के पास कर दिया जाता है। इस प्रकार मंदिर व्यवस्था में दलितों की क्या हैसियत है इस तथ्य को उजागर किया जाता है। इस कहानी में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने धार्मिक कट्टर पंथी ब्राह्मणों के आतंकित कर देने वाले रूप को दिखाया है। वहीं ऋषिकुमार के रूप में समाज में सोच बदलने वाले भी अंकित किये है। कितना त्रासदपूर्ण है कि सवर्ण समाज अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए सभी कार्य दलितों से करवाता है। इस कहानी में सदियों से चली आ रही सड़ी-गली सोच का विरोध किया गया है। सपना कहानी में नायक भी भेदभाव का शिकार हो जाता है। 'बैल की खाल' कहानी में दलितों के प्रति अभिजात वर्ग के अमानवीय व्यवहार और उनकी यातनापूर्ण जिंदगी की विडम्बनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। इस कहानी में दो मुख्य पात्र है- काले और भूरे। गांव में किसी व्यक्ति का मवेशी मर जाए तो गांव से बाहर ले जाना उनका फर्ज बनता है। उनके अभाव में यह कार्य कोई ओर नहीं करता , मरे मवेशी की खाल उतारकर बेचने से जो आमदनी होगी उससे उनका आर्थिक बोझ कुछ हल्का होगा। कहानीकार द्वारा कहानी में यहां एक ओर जाति व्यवस्था के अमानवीय अत्याचार को दिखाते है तो दूसरी ओर दलितों के मन में दूसरों के प्रति दया, ममता, तथा विशालता को भी दिखाते है। 'घुसपैठिये' कहानी में दलित छात्रों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। दलित छात्रों कर आरक्षण के आधार पर प्रवेश मिल तो जाता है परन्तु उनके साथ बाद में जानवरों सा व्यवहार किया जाता है।

अगर संबंधित प्राचार्य से शिकायत की जाए तो राजनैतिक मुद्दा बताकर इसको टाल देते है । यदि कोई प्रतिभाशली दलित छात्र प्रवेश पा जाता है तो उसे घुसपैठ कहा जाता है । और इतना सताया जाती है कि उनको आत्महत्या की शरण लेनी होती है । इस कहानी में जहां एक ओर दलित शोषित छात्र सुभाष सोनकर कहानी है वहीं दूसरी ओर रमेश की कहानी है जो दलित उत्थान के कार्य में निरंतर लगा हुआ है । रमेश सरकारी नौकर है जो सुभाष सोनकर की घटना से विचलित हो जाता है । उसे बाबा साहेब का कथन याद आता है 'जुल्म करने से जुल्म सहना सबसे बड़ा अपराध है '। दलित समाज के पढ़े लिखे लागों पर रोष इस प्रकार व्यक्त करता है " तुम लोग अपने आप को समझते क्या हो ? तुम लोगों सिर्फ बड़े-बड़े प्रमोशन चाहिए वे भी आरक्षण के भरोसे । बच्चों को एडमिशन स्कूल -कालेज में चाहिए वो भी कोटे से ही चाहिए । लेकिन इस कोटे को बचाये रखने के लिए जब कुछ करने की नौबत आती है , तुम लोगों के जरूरी काम निकल आतें है , या फिर दफ्तर से छुट्टी नहीं मिलती ।...... बाबा साहेब तो है नहीं .... और बाबा साहेब के नुमाइन्दे बनने का जो ढोंग करते है वे भी संसद में पहुंचतें ही गीदड़ बनकर उनकी गोद बैठ जाते है जो आरक्षण विरोधी है और नौंटकीं करने में माहिर है ।"[7] 'मम्बई काण्ड' कहानी में दलित मानसिकता और सोच में गुणात्मक परिवर्तन के विकास को दर्शाया गया है । इस कहानी का नायक सुमेर है वह बाबा साहेब को अपना आदर्श मानता है । कुछ अज्ञात को डॉ0 अम्बेडकर की मूर्ति को खण्डित कर देते है । सुमेर दलित लोगों के साथ मिलकर उसका विरोध करता है । विरोध करने पर पुलिस अपना कार्य दण्डों से पूरा कर देती है । कई दलित मारे जाते है सुमेर घटना से विचलित हो जाता है और संघ बनाकर इसका विरोध करना चाहता है । वह विचार करता है "अरे! मैं यह क्या कर रहा हूं । मुम्बई में किसी ने मेरे विश्वास पर चोट की और में यहां किसी की आस्था को चोट करने जा रहा हूं । कुछ गांधी को बापू कहते है तो कुछ अम्बेडकर को बाबा । वहा बाबा कहने वाल मारे गये । यहा बापू वाल भी मारे जा सकते है । बाबा कहने वालों पर गाज गिर सकती है । जो भी हो मारे तो निर्दोष ही जाएंगे ।"[8] मानवता की गहरी समझ इस कहानी की कथावस्तु में है । "मम्बई काण्ड में सुमेर पर होने वाला परिवर्तन काई भावुक हृदय परिवर्तन नहीं बल्कि विचारों का बदलाव है । दरसहल ये वो दलित चेतना है जिसके सहारे परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है क्योकि बगैर सोच में बदलाव की स्थिति में बदलाव भी अधूरा होगा । यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि दलित साहित्य में विचारों का जगह मिल रही है । यही कहानी के आरोप का जबाबं भी है ।"[9] समाज में एक दूसरे की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर एक-दूसरे समुदाय को आपस में लड़ाने का कार्य किया जाता रहा है । लेखक द्वारा लोगों में समाजिक चेतना फैलाने का कार्य अपनी लेखनी के द्वारा किया जा रहा है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की पहचान हिन्दी दलित साहित्य में प्रतिनिधि हस्ताक्षर के रूप में की जाती है । उनके द्वारा रचित समस्त कहानियों की कथावस्तु पाठकों को उनकी कहानियों को पढ़ने के बाद सोचने पर मजबूर कर देती है । उन्होनें अपनी कहानियों में निम्न वर्ग के पात्रों द्वारा दलित वर्ग की मनोदशा का वर्णन किया

है । इनकी कहानियों में सदियों से चली आ रही परम्पराओं व रुढ़ियों का नई पीढ़ी के शिक्षित युवाओं द्वारा विरोध को प्रदर्शित कर दलितों में जागरुकता फैलाने का कार्य किया गया है । उनके अनुसार दलित ही दलित की पीड़ा का बेहतर ढ़ग से समझ सकता है, और वही उस अनुभव की प्रमाणिक अभिव्यक्ति कर सकता है। इस आशय को उन्होनें अपनी आत्मकथा झूठन में सिद्ध किया । सवर्णों द्वारा किस तरह से दलितों पर अत्याचार किये जाते है, व उनकी दैनिक जीवन की दर्द की अभिव्यक्ति ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से की है ।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-**


**1-** वाल्मीकि ओमप्रकाश,‘‘दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र’’ राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली ,वर्ष 2001, पृ0 14 ।

**2-** सिंह एन,‘‘दलित साहित्य के प्रतिमान’’,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृ0 68 ।

**3**-धर्मवीर,‘‘हरिजन से दलित’’, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2008, पृ0 155।

**4**-वाल्मीकि ओमप्रकाश,‘‘दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र’’,राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2001, पृ0 13 ।

**5**-वही, पृ013 ।

**6-** तिवारी बिहारी बजरंग,‘‘दलित साहित्य एक अन्तयार्त्रा’’,नवारूण प्रकाशन गाजियाबाद,वर्ष 2015, पृ0 22 ।

**7-** वाल्मीकि ओमप्रकाश,‘‘घुसपैठिये कहानी संग्रह-घुसपैठिये’’,राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली,वर्ष 2009 पृ014 ।

8- वाल्मीकि ओमप्रकाश,‘‘घुसपैठिये कहानी संग्रह-मुम्बई काण्ड’’,राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2009 पृ034-35 ।

**9**-जोशी भालचन्द्र,‘‘ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में सामाजिक लोकतांत्रिक चेतना स0 हरपाल सिंह‘अरूष’ ’’,पृ021 ।